इमाम हुसैन (अ0) का मुख्य लक्ष्य सत्य एवं मानवता की रक्षा

जनाब मोहम्मद असग़र किन्तूरी साहब

सत्य अहिंसा एवं मानवता के रक्षक इमाम हुसैन (अ0) ने यह शब्दों से ही नहीं वरन् उसको अपनी ज़िन्दगी में उतार कर संसार भर में लोगों को नसीहत दे दी कि अगर न्याय और अन्याय के बीच रस्सा कशी हो तो तुम अपने प्राणों की परवाह किये बिना सत्य मानवता और न्याय पर न्योछावर हो जाना। हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने इसी चीज़ को अपनी ज़िन्दगी में उस समय उतारा जब यज़ीद शासक बन कर शराब के नशे में धुत होकर इस्लामी कानूनों में रददोबदल कर रहा था उसने इन हरकतों पर इमाम हुसैन (अ0) से सत्यता की मुहर लगवानी चाही तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इन्कार कर दिया फिर क्या था अत्याचारों का सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन (अ0) और उनके समर्थकों पर यज़ीद की ओर से होने लगा। लेकिन उन्होंने कोई परवाह नहीं की। यहाँ तक कि ऐसा वातावरण बनाया गया जिससे कि विवश होकर इमाम हुसैन (अ0) को अपना वतन छोड़ना पड़ा और अपने नाना अर्थात मुस्लमानों के आखरी रसूल मुहम्मद मुस्तफा (स0) से जुदा होकर कबरला की ओर रवाना होना पड़ा। लगभग एक लाख यज़ीदी फौज ने हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को कबरला के जंगल में झुलसती हुई गर्मी में घेर लिया और मुहर्रम की 7 वीं को उन पर तथा उनके साथियों पर पानी भी बंद कर दिया। इन सब मुसीबतों का सामना करने के बावजूद हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अन्याय के सामने सिर नहीं झुकाया यहाँ तक कि यज़ीदी फौज की ओर से आक्रमण होने लगे जिसका धैर्यता पूर्वक इमाम हुसैन (अ0) के समर्थकों ने सामना किया लेकिन फिर भी अपने समर्थकों को यह मनाही कर दी कि पहले तुम लोग किसी पर हमला नहीं करना।

एक समय वह भी आया जब खैमें में सिर्फ एक छह महीने का बच्चा हज़रत अली असगर (अ0) रह गया। तो हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने दुश्मनों के हवाले अपने उस बच्चे को स्वयं कर दिया ताकि उस तीन दिन के प्यासे बच्चे को यज़ीदी फौज के लोग पानी पिला दें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि तीन भाल के तीर से गले को निशाना बनाया गया और मैदाने, करबला में अली असग़र (अ0) अपने बाप के हाथों पर शहीद हो गये। आख़िर यह सब इमाम हुसैन (अ0) ने क्यों किया ? केवल इस कारण कि आम लोगों के ऊपर जब कोई मुसीबत पड़े तो धैर्य से काम लें। साथ ही मानवता अहंसिा एवं सत्य के लिए अपना सर्वस्व त्यागने में लोग हंसी खुशी से आगे आयें। यही वजह है कि हज़रत इमाम हुसैन का नाम आज सारे विश्व में न्याय एवं सत्य के प्रतीक के रूप में चमकता है और हमेशा चमकता रहेगा। यह और बात है कि मुसलमानों का एक सप्रदाय अपना विशेश रूप से इमाम मानकर मुहर्रम के दिनों में कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे कि उनके उद्देश्य को कोई क्षति पहुंचे। साथ ही साथ मुहर्रम के ज़माने में इमाम हुसैन (अ0) और उनके परिवार एवं कर्बला के मैदान में उनका साथ देने वालों के उपर हुए बर्बर अत्याचार की याद को ताज़ा करते हुए आँसू बहाता है सीनाजनी करता है। जैसा कि आम ज़िन्दगी में देखने को मिलता है कि जब कोई मनुष्य या कोई गिरोह पर अत्याचार करता है और जिस गिरोह पर अत्याचार हुआ होता है वह जब न्याय की फरियाद करता है तो अन्यायियों को धक्का पहुंचता है तथा उस समय यही कोशिश होती है कि कोई ऐसा षडयन्त्र रचा जाये जिससे कि न्याय न होने पाये। इसके लिए सबूत पक्ष का कभी भी सफाया कर दिया जाता है।

(बक़िया पेज नं0 26 पर,..........)

बन्दी कर के मेरे सामने उपस्थित करो। मुस्लिम (अ0) रात्रि के अन्धेरे में शरण स्थल खोजते रहे, लेकिन आत्म सम्मान यह अनुमति नहीं दे रहा था। कि किसी से कुछ कहें। आपने देखा कि एक स्त्री दरवाज़े पर खड़ी है। उस स्त्री से कहा कि मुझे पानी पिला दो। वह स्त्री पानी लाई और आपने वो पिया और वही बैठे रहे। उस स्त्री ने कहा कि हे भाई यह समय बहुत खराब है वातावरण बहुत दूषित है। तुम पानी पी चुके। अब अपने घर चले जाओ। मुस्लिम (अ0) ने गर्दन झुका ली और कुछ देर तक सोचते रहे और कहा कि मेरा घर यहां नहीं है। मैं मदीने से आया हूँ। स्त्री ने पूछा तुम कौन हो और किस परिवार से हो ? आपने उत्तर दिया कि मैं मुस्लिम बिन अक़ील हूँ। स्त्री यह सुनते ही पैरों पर गिर पड़ी, जिसका नाम तौआ था। तौआ ने कहा कि आप मेरे घर पधारें। घर में लायी और बिस्तर लगाया वह मोमिना कभी उस कमरे में जाती और कभी बाहर आ जाती इसी बीच उसका लड़का आ गया तौआ ने पूछा कि बेटा तुम कहाँ थे ? मैं बिन ज़ियाद के दरबार से आ रहा हूँ अम्मा। उसने यह घोषणा की है कि जो मुस्लिम की खोज लगा देगा उसको धन दौलत से माला माल कर दिया जायेगा लड़के ने बताया। माँ परेशान होकर बोली बेटा तुम्हें इससे क्या मतलब लड़का शायद माँ की परेशानी भाप चुका था उसने पूछा कि अम्मा यह बताओ कि इस कमरे में आप क्यों बार–बार जाती हैं। तौआ ने बात टालनी चाही लड़का आग्रह करने लगा माँ ने कहा कसम खाओ कि यह बात किसी से नहीं कहोगे तो बता दूँ। इस कमरे में मुस्लिम हमारे मेहमान हैं माँ ने बता दिया। लड़का दुनिया के माल की लालच से रात भर नहीं सोया और सवेरे बिन ज़ियाद को जा के बता दिया कि मुस्लिम हमारे घर में हैं। थोड़ी ही देर में तौआ का घर घेर लिया गया और जनाबे मुस्लिम भी फ़ौज के मुक़ाबले के लिए निकल पड़े। और घमासान का रन पड़ा। मोहम्मद बिन अश्अस ने और सैनिक की मदद माँगी। बिन ज़ियाद ने कहा कि एक आदमी के लिए कितनी फ़ौज चाहिए। इब्ने अश्अस ने जवाब दिया कि मोर्चा पैगम्बर के घराने के योद्धा से है। किसी साधारण व्यक्ति से नहीं। और फ़ौज आयी, फिर भी लड़ाई में सर बर न हो सकी जहाँ जनाबे मुस्लिम थे उधर गड्ढ़ा खोदा गया। और तलवार के बजाय पत्थर चलाए जाने लगे। हज़रत मुस्लिम ज़ख्मों की ताब न लासके और उसी गड्ढ़े में जा गिरे। फिर दुश्मन की फ़ौज टूट पड़ी और बन्दी बना के इब्ने ज़ियाद के दरबार ले गयी। आपने इब्ने ज़ियाद को सलाम नहीं किया। आप से कहा गया कि ''अमीर'' को सलाम करो। हज़रत मुस्लिम ने जवाब दिया कि हुसैन के अलावा मेरा ''अमीर'' कौन है इब्ने ज़ियाद बोला सलाम करो या न करो क़त्ल तो किए ही जाओगे। उससे तो बच नहीं सकते।

जनाबे मुस्लिम ने कहा कि मैं कुछ वसीयतें करना चाहता हूँ। कोई है जो मेरी वसीयत माने उमर बिन साद ने हामी भरी। जनाबे मुस्लिम ने कहा कि मैं वसीयत एकान्त में करना चाहता हूँ। एकान्त में आपने इब्ने साद से पूछा कि तुम मेरी वसीयत मानोगे। उसने फिर स्वीकृति दी तब आप ने फ़रमाया कि मेरे पास एक हज़ार दीनार हैं यह इमाम के पास पहुंचा देना। मेरे क़त्ल की सूचना भेज देना और कहलवा देना कि इमाम कूफ़े तशरीफ़ न लायें। कूफ़े वाले विश्वसनीय नहीं हैं और इन्होंने बैअत तोड़ दी है। फिर आप को छत पर ले जाया गया और आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और खुदा का शुक्र अदा किया। और मुसलमानों को यह सबक़ दे गये कि मौत की गोद में भी पैग़म्बर के घराने वाले किसी हाल में ईश्वर को धन्यवाद देना नहीं भूलते। फिर आप को क़त्ल करके शव नीचे फेंक दिया गया और सिर यज़ीद के पास भेज दिया गया।

बाक़ी पेज नं0 37 का ....)

लखनऊ की सरज़मीन पर भी ऐसा ही कुछ दृश्य पिछले दस वर्षों में देखने को मिल रहा है। काश आज माहोल बदलता और मुहर्रम के दिनों में सभी मुसलमान यह संकल्प लेते कि हम लोग जोर जुल्म अत्याचार, को मिटाने एवं सत्य व अहिंसा की रक्षा हेतु एक दूसरे से कंधे स कंधा मिलाकर चलेगे तथा दूसरों के दुख दर्द को अपना दुख दर्द समझेगे जो कि इमाम हुसैन का मुख्य लक्ष्य था हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की याद में निकलने वाले अज़ादारी के जुलूस भी बन्द हैं। उन्हें सभी मुसलमान मिलकर फिर से निकालते तो यह समझा जाता की रसूले इसलाम का कलमा पढ़ने वाले मुसलमान नवासे रसूल के बताये हुए रास्ते पर चल रहे हैं।